वैदिक काल से आधुनिक शिक्षा पद्धति तक जीवन कौशल एवं पाठ्यक्रम में परिवर्तनशील प्रतिमानः एक अध्ययन

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

एक सिनॉप्सिस

शिक्षा में डॉक्टेट के पंजीकरण के लिए प्रस्तुत

शिक्षा विभाग में

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय

पर्यवेक्षिका
जेवीएन डॉ. चेतना

प्रस्तुतकर्त्ता
अल्का शर्मा

शिक्षा विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,

जयपुर; राजस्थान, भारत

'वैदिक काल से आधुनिक शिक्षा पद्धति तक जीवन कौशल एवं पाठ्यक्रम में परिवर्तनशील प्रतिमानः एक अध्ययन

प्रस्तावना

शिक्षा एक साधन है जिससे किसी देश की उन्नति हो सकती है। शिक्षा एक नये और उज्ज्वल समाज के विकास का आधार है। विद्या एक दीप है जिससे जीवन के समस्त अन्धकार को दूर करके बालक में पवित्र संस्कारों, भावनाओं, नैतिक दृष्टिकोण और भावी विचारों को जन्म देता है। जिससे बालक का समस्त जीवन प्रकाशित होता है। जो देश के भावी नागरिक है। उनके व्यक्तित्व का संतुलन एवं उचित परिमार्जन करती है। इसके लिए शिक्षा का उद्‌देश्य मनुष्य के सर्वागीण विकास अर्थात शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास करना है। शिक्षा मनुष्य को प्रत्येक परिस्थिति में तर्क के आधार पर सुलझाने का ज्ञान प्रदान करती है। विद्यालयों का वातावरण चाहे वो शैक्षिक हो या सह शैक्षिक उसमें छात्रों की मानसिकता उनकी इच्छाओं सहज आकांक्षाओं को पूरा करते हुए यदि विद्यालय संचालन किया जाए तो छात्रों में एक नवीन उत्साह परिवर्तन दिखाई देता है। जो छात्रों के साथ विद्यालय को भी उचित वातावरण प्रदान करती है। अध्यापन कार्य एवं सह शैक्षणिक गतिविधियों का संतुलन उत्तम होना चाहिए। जिसमें छात्र स्वयं को चहुमुंखी विकास के क्षेत्र में श्रेष्ठ अनुभव करें।

भारतीय समाज के विकास और उसमें होने वाले परिवर्तनों की रूपरेख में शिक्षा की जगह और उसकी भूमिका को भी निरंतर विकासशील पाते है। सूत्र, काल तथा वंश के बीच शिक्षा की सार्वजनिक प्रणाली के पश्चात् हम बौद्धकालीन शिक्षा को निरंतर भौतिक तथा सामाजिक प्रतिबद्धता से परिपूर्ण होते देखते है। भारत में प्राचीन काल में गुरूकुलों को प्रचलन था। यहां गुरू अपने शिष्य को अपने ही घर पर सीखाता था। इससे गुरू और शिष्य के बीच एक मजबूत संबंध बन जाता था। इस समय 64 तरह के विषयों का अध्ययन करवाया जाता था। इसमें जीवन कौशल शिक्षा का विशेष स्थान भी था।

आधुनिक स्कूल शिक्षा प्रणाली 1830 में लॉर्ड मैकाले द्वारा दी गई और इसमें गुरूकुल शिक्षा को समाप्त कर दिया। नए प्रकार के विषय और अधिगम जोड दिए गए। जीवन कौशल समाप्त कर दिया गया। इसमें केवल भाषा, गणित और विज्ञान जैसे विषयों को ही प्राथमिकता दी गई। इस प्रणाली ने पाठ्यक्रमों में परिवर्तन कर भारतीय समाज को विघटित करने का काम किया।

जीवन कौशल

जीवन कौशल से तात्पर्य है जो व्यक्तित्त्व के चहुँमुखी विकास के साथ घर, परिवार, समाज, राष्ट्र व अंतर्राष्ट्रीयता से अनुकूलन व अपनत्व का अहसास करा सकें। अर्जित ज्ञान को व्यावहारिक रूप प्रदान कर सकें, जीवन के संघर्षों को समझने और उनसे जूझने की क्षमता प्रदान कर सके। जीवन की आपत्तियों से घबराकर कायरों की तरह पलायन करने की अपेक्षा विवेकसम्मत सामना कर सकें। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार" जीवन कौशल अनुकूलात्मक और सकारात्मक व्यवहार की वह योग्यताएं हैं, जो व्यक्ति को दैनिक जीवन की मांगों और चुनौतियों से प्रभावपूर्ण समायोजन करने योग्य बनाती है।"

जीवन कौशल मुख्यतः तीन घटकों पर आधारित है – 1. ज्ञान अथवा सूचना, 2. आचरण और मूल्य, 3. व्यवहार परिवर्तन, जीवन कौशल अन्य कौशलों से भिन्न होते हैं। अन्य कौशल सामान्यजीवन जीने में तो सहायक हैं लेकिन इन कौशलों का प्रभावपूर्ण ढंग से उपयोग करने के लिए जीवन कौशलों की आवश्यकता होती है, परम्परागत ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के व्यावहारिक उपयोग के लिए जिन चीजों की आवश्यकता है, वे सभी जीवन कौशल में निहित है। इससे किशोरों के व्यवहार में दायित्त्वों का बोधजागृत होगा और वे मानसिक और भावनात्मक रूप से स्वस्थ किशोर बन सकेंगे। हमारे वातावरण में कई संसाधन और सुविधाएं उपलब्ध होती हैं जिनको प्रयोग करने के लिए कुशलताओं की जरूरत है। इन जीवन कुशलताओं को बढ़ाने में मदद करने वाला कौशल 'जीवन कौशल' कहलाता है।

जीवन के कौशल में शामिल है मानसिक क्षमताएं और अन्तर्वैयक्तिक क्षमताएं जिसमें व्यक्तियों को सही निर्णय के साथ मदद करने, समस्याएं सुलझाने, समीक्षात्मक और सृजनात्मक तरीके से सोचने, सही प्रकार से संवाद करने, स्वस्थ संबंध बनाने, दूसरों को महत्व देने और अपने जीवन को स्वस्थ व उत्पादक तरीके से जीने की स्थितियां होती हैं। अनिवार्य रुप से ये दो प्रकार के कौशल हैं जो कि सोचने के कौशल से संबंधित है और दूसरे प्रकार के कौशल में लोगों के साथ संबंध महत्वपूर्ण है जो कि सामाजिक कौशल कहलाते है। सोचने का कौशल आपकी वैचारिक क्षमता और व्यक्तिगत स्तर पर निर्भर करता है। सामाजिक स्तर में अन्तर्वैयक्तिक कौशल होता है जो व्यक्ति के साथ तब आता है जब उसके आस पास व्यक्ति और संवाद जारी हो इन दोनो प्रकारों का संयोजन मिलकर जो कौशल बनता है, वह एक सकारात्मक व्यवहार उपयोग में लाने और सही मोल तोल की स्थिति को बनाता है।" संवेदनात्मक कौशल को एक ऐसा कौशल माना जा सकता है जिसमें केवल तर्कसंगत निर्णय ही नही लिये जाते वरन बाकी सभी को इस बिन्दु पर सकारात्मक किया जाता है। यह करने के लिये यह महत्वपूर्ण है कि किशोरों को अपने आन्तरिक विवाद और समस्याओं से निपटना सिखाया जाए। इसके कारण वे किसी विशेष समूह के साथी और परिवार से मिलने वाले दबाव को सहने लायक बन पाएंगे। युवाओं को सही व स्वस्थ विकास की प्रक्रिया के लिये

सोचने का और सामाजिक, दोनो कौशलों की आवश्यकता होती है। आत्म जागृति इसमें शामिल है स्वयं की पहचान, अपना चरित्र, अपनी क्षमताएं और कमियां, इच्छाएं और नापसंद। आत्म जागरण होने की स्थिति में किशोर यह पहचान सकते हैं कि वे कब तनाव के प्रभाव में होते हैं और कब उन्हे दबाव महसूस होता है। आत्म जागरण सामान्य रुप से प्रभावी संवाद और सही अन्तर्वैयक्तिक संबंधों के चलते होता है और यह दूसरों के साथ समानुभूति भी विकसित करता है। समानुभूति एक सफल संबंध यदि हम अपने प्रियजनों के साथ और समाज के साथ बनाना चाहते हैं, तब यह महत्वपूर्ण है कि हमें अपनी किशोरावस्था में, अन्य व्यक्तियों की आवश्यकताएं, इच्छाएं और संवेदनाओं के बारे में जानना होगा। समानुभूति वह क्षमता है जिसमें सामने वाले व्यक्ति को लेकर व उसके जीवन को लेकर सोचा जाता है। बिना समानुभूति के, वह संवाद जिसे किशोर द्वारा दूसरों के साथ किया जाता है, यह दो तरफा प्रक्रिया नही होती। जब किशोर स्वयं को समझने लगता है, तब वह दूसरों के साथ सही संवाद के लिये तैयार होता है और इसी समय उसे दूसरों को मदद और सहारा देना और उनके साथ सही समझ विकसित करने की प्रक्रिया से गुजरने की स्थिति बनती है। समानुभूति से किशोरों को यह स्वीकारने में मदद मिलती है कि दूसरों की स्थिति क्या है और उनमें व दूसरे व्यक्ति में क्या अन्तर है। इसके चलते उनका सामाजिक संवाद सुधरता है। केवल साथियों के साथ कक्षा में होने वाला संवाद ही नही, यह जीवन में आगे भी मदद करने वाला होता है जो कि अनेक प्रकार के पारंपरिक या सांस्कृतिक विविधता से संबंधित है।

जीवन कौशल के उद्देश्य

1. जीवन की गुणवत्ता बढ़ाना

2. समस्या समाधान व निर्णय क्षमता का विकास करना

3. सामंजस्य व समायोजन की भावना विकसित करना

4. विभिन्न रोगों से मुक्ति के प्रति जाग्रति उत्पन्न करना

5. जनसंख्या वृद्धि के परिणामों से अवगत कराना

6. तनाव रहित जीवन के तरीकों से परिचित कराना

7. जीवन मूल्यों की आवश्यकता से परिचित कराना।

जीवन कौशल शिक्षा द्वारा व्यक्ति के मानसिक सोच को बदला जा सकता है। दूसरे व्यक्ति के प्रति नजरिया सुधारा जा सकता है तथा उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है।

पाठ्यक्रम

शिक्षण की क्रियाओं के संपादन का आधार पाठ्यवस्तु या विषय वस्तु होती है। पाठ्यपुस्तकों के विकास के लिए यह एक प्रमुख साधन है। शिक्षक और शिक्षण क्रियाओं द्वारा ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करता है जिससे विद्यार्थियों को नए अनुभव होते है और उन्हें कुछ करना भी पड़ता है। परिस्थितियां किस आधार पर उत्पन्न करनी है इसका विवरण शिक्षक को पाठ्यक्रम द्वारा मिलता है।

पाठ्यक्रम शब्द का उद्भव लैटिन शब्द 'क्युरेरे' से हुआ है। जिसका अर्थ है दौड़ना अथवा दौड़ का मैदान अथवा लक्ष्य तक पहुंचने के लिए दौड़ का मार्ग।

फिलिप एच. टेलर के अनुसार पाठ्यक्रम के अंतर्गत पाठ्यवस्तु, शिक्षण, शिक्षण विधियां तथा उद्देश्यों को सम्मिलित किया जाता है। इन क्रियाओं को कैसे प्रारंभ किया जाए इन तीनों पक्षों की अंतःक्रियाओं को पाठ्यक्रम कहते है।

भारत में पाठ्यक्रमों और पाठ्यवस्तुओं को लेकर विभिन्न परिवर्तन होते रहे है। पहले वैदिक कालीन, बौद्धकालीन, मध्यकालीन एवं मुगलकालीन पाठ्यक्रमों के बाद कोठारी आयोग, शिक्षा नीति 1968, शिक्षा नीति 1986, 1992 और 2022 द्वारा इसे समय–समय पर बदला गया है।

साहित्य समीक्षा

जेनिफर नोएल (2000) 'हाई स्कूल करियर शिक्षाः छात्र योजनाएं जीवन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम' इस अध्ययन ने जीवन कौशल, कैरियर चयन, और अन्य पाठ्यक्रम के काम के संबंध में उनके लिए लाभकारी उच्च विद्यालय के छात्रों कैरियर शिक्षा पाठ्यक्रम की जांच की। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि उच्च विद्यालय के छात्रों को जीवन कौशल, कैरियर चयन, और अन्य पाठ्यक्रम के काम के संबंध में कैरियर शिक्षा पाठ्यक्रम को लाभकारी मिला या नहीं। अध्ययन छात्रों को जीवन कौशल पाठ्यक्रम के लाभों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया था। महाविद्यालय स्तर पर कक्षाओं की पेशकश की गई है और छात्रों ने पाया कि उनके पाठ्यक्रम में कई सकारात्मक पहलू है। इस अध्ययन की अवधारणा यह है कि ज्यादातर छात्र कक्षा से लाभ के कई लाभों को समझते हैं और पाठ्यक्रम को सकारात्मक रूप से मूल्यांकन करते हैं। नमूना एक हाई स्कूल से छात्रों को शामिल प्रत्येक स्कूल अलग–अलग पाठ्यक्रमों को सिखाता है और एक अलग नाम से कैरियर शिक्षा पाठ्यक्रम कहलाता है। अधिकांश छात्रों को उम्र में पन्द्रह से सत्तर से लेकर थे। इस शोध में इस्तेमाल किए गए साधन एक कैरियर एजुकेशन सर्वे नामक प्रश्नावली था। छात्रों ने महसूस किया कि यह पाठ्यक्रम जीवन कौशल से संबंधित उनके लिए फायदेमंद है।

फेलिसा देसकेओ (2002) 'जीवन कौशल को मानक को जोड़ने का महत्व शोधकर्ता को वास्तविक जीवन स्थितियों के लिए लागू सभी शैक्षणिक विषयों की अपर्याप्तता मिल गई है और जब वास्तविक दुनिया में अस्तित्व की बात आती है तब वास्तव में यह बहुत उपयोगी नहीं है। मानक स्कूल पाठ्यक्रम में जीवन कौशल जोड़ना, जब वे स्कूल खत्म करते हैं और नौकरी खोजना शुरू करते हैं और अपने स्वयं के परिवार को शुरू करते हैं तो युवा लोग अधिक उत्पादक बन जाते है। अध्ययन में आगे कहा गया है कि यदि वे जीवन में मूलभूत कौशल जानती हैं तो बच्चों को जीवन में और अधिक प्राप्त होगा, जो कि वे अपने दिन–प्रतिदिन की गतिविधियों के साथ काम करने में मदद करेंगे। मानक स्कूल पाठ्यक्रम में जीवन कौशल को जोड़ना महत्वपूर्ण है यदि यह स्कूल के पाठ्यक्रम में जोड़ा जाता है तो छात्रों के साथ बड़े पैमाने पर कोई समस्या नहीं होती है और उन्हें स्वयं का नौकरी मिलती है।

झोलिंगर, टीडब्ल्यू, कमिंग्स, एस.एफ., और केन वी (2003) 'मिरियन काउंटी, इंडियाना में मिडिल स्कूल छात्रों के तंबाकू उपयोग के बारे में जीवन कौशल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का प्रभाव' शोधकर्त्ता ने मिश्रित परिणामों के साथ स्कूल आधारित तंबाकू की रोकथाम और नियंत्रण कार्यक्रमों के मूल्यांकन पर अध्ययन किया। इस अध्ययन ने मिडिल स्कूल के छात्र के ज्ञान, रवैया, और अच्छे जीवन शैली निर्णय लेने की क्षमता पर जीवन कौशल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के प्रभाव का मूल्यांकन किया। 1997 से 2000 तक, अध्ययन के स्कूलों में छह से आठ स्तर के छात्रों को जीवन कौशल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्राप्त हुआ। सर्वेक्षण डेटा से उन लोगों की तुलना करने के लिए उपयोग किया जाता है जो कार्यक्रम के संपर्क में नहीं है और तंबाकू के उपयोग के व्यवहार और व्यवहार को दिखाते हैं। सर्वेक्षण में 12.5 प्रतिशत छात्र वर्तमान में धूम्रपान कर रहे थे लाइफ स्किलिंग टीचिंग कोर्स पूरा करने वाले छात्रों को धूम्रपान के स्वास्थ्य प्रभावों के बारे में अधिक जानकारी थी। कार्यक्रम प्रभाव पुरुष और महिला छात्रों के लिए और साथ ही सफेद और काले छात्रों के लिए अलग थे।

शर्मा एस (2003) 'काठमांडू के माध्यमिक विद्यालय में किशोरावस्था के जीवन कौशल को मापना।' शोधकर्त्ता ने माध्यमिक विद्यालय में किशोरों के जीवन कौशल को मापने के लिए पेपर प्रकाशित किया है। इस अध्ययन का उद्देश्य जीवन कौशल को मापने और काठमांडू में माध्यमिक विद्यालय के किशोरों में जीवन कौशल के स्तरों का आकलन करने के लिए एक पैमाने का विकास करना था। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि ज्यादातर शिक्षक जीवन कौशल की अवधारणा से अवगत नहीं थे। मातृ शिक्षा का महत्व किशोरों में उच्च जीवन कौशल स्तरों के साथ काफी महत्वपूर्ण था। किशोरों में जीवन कौशल के स्तर को प्रभावित करने वाले अन्य महत्वपूर्ण कारक कनेक्टेडनेस और पारिवारिक सहायता थे। कागज आगे युवा लोगों को जीवन कौशल शिक्षा पर जोर देते है और इससे उनकी मानसिक और शारीरिक विकास में भी मदद मिलेगी।

गणेश बी सिंह (2006) 'जीवन कौशल शिक्षा, मुद्दों की प्रकृति और उनके सिस्टम प्रावधान से जुड़ाव इस अध्ययन के माध्यम से उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि पाठ्यक्रम–आधारित शिक्षा कार्यक्रमों के बहुमत स्कूल कार्यक्रम में कार्यान्वित किए जाते हैं, किशोरावस्था और युवाओं को मुख्य लक्ष्य समूह के रूप में, मुख्य फोकस उन पर संसाधन के रूप में रखा जाता है। सामान्य तौर पर, पाठ्यचर्या शिक्षक या सुविधा देने के लिए काफी मार्गदर्शन प्रदान करती है और प्रभावी ढंग से लागू होने पर लगातार परिणाम उत्पन्न कर सकती है। इस मामले के अध्ययन के पांच जिलों में 11 नमूना स्कूलों को शामिल किया गया। विभिन्न स्तरों पर समीक्षा, कक्षा अध्यापन सीखने के अवलोकन और बातचीत किए गए थे डेटा एकत्र करते हुए और इन पहलुओं का विश्लेषण भी ध्यान केंद्रित किया गया सामग्री बनाम प्रक्रिया, व्यक्तिगत जोर बनाम समूह प्रयासय और प्रोग्राम विकास, कार्यान्वयन और प्रभाव के संबंध में तालमेल, समेकन तालमेल। निष्कर्षों के आधार पर अध्ययन दो मुख्य सुझावों के साथ आया है – शैक्षणिक सुधार और जीवन कौशल शिक्षा के संबंध में विशिष्ट मुद्दों को संबोधित करना।

कॉर्ड–नोहाबी और हसन पाशा शरीफी (2008) 'हाई स्कूल अवधि में छात्रों के लिए जीवन कौशल पाठ्यक्रम तैयार करना और संकलन करना।' अध्ययन के परिणामों से संकेत मिलता है कि जीवन कौशल के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम पैटर्न में उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, प्रकार की सामग्री, शिक्षण विधियों, और जीवन कौशल के मूल्यांकन तरीकों शामिल हैं। आंकड़ों के विश्लेषण से संकेत मिलता है कि छात्रों को स्वयं–जागरूकता कौशल का शिक्षण इस कौशल की प्रगति में प्रभावी है। 600 उच्च–विद्यालय के छात्रों (प्रत्येक ग्रेड के 150 छात्र) पर 50 आइटम के साथ एक प्रश्नावली, 50 से अधिक मदों के साथ एक प्रश्नावली 240 माता–पिता पर दी गई थी और 12 मदों के साथ एक प्रश्नावली 150 उच्च–विद्यालय के शिक्षकों, 20 हाई–स्कूल पाठ्यक्रम विशेषज्ञ, और विश्वविद्यालयों के 10 संकाय सदस्य। अध्ययन के परिणाम में संकेत मिलता है कि स्वयं–जागरूकता, प्रभावी संचार, पारस्परिक संबंध, तनाव से निपटने, निर्णय लेने, समस्या सुलझना, महत्वपूर्ण सोच और रचनात्मक सोच सभी समूहों के लिए महत्वपूर्ण प्राथमिकताएं हैं।

जयंत अरवटिया (2009) 'स्कूल जीवनशैली शिक्षणः बच्चों के लिए शिक्षा'। शोधकर्त्ता कहता है कि शिक्षा प्रणाली या पाठ्यक्रम को चाहिए। भविष्य की पीढ़ी के लिए होगा और इसमें कौशल कार्यक्रम की जरूरी आवश्यकता है, शिक्षा व्यवस्था। अन्वेषक में जीवन कौशल कार्यक्रम के कार्यान्वयन पर केंद्रित है। हमारे देश को विकसित करने के लिए हमारे बच्चों को बेहतर नागरिक बनाने के लिए स्कूल पाठ्यक्रम समाज और विषय के अलावा बच्चों को दी गई शिक्षा का मूल्यांकन ज्ञान। यह अध्ययन हमारे बच्चों को पढ़ाने के लिए जीवन कौशल शिक्षा पर बल देता है। उन्हें जीवन जीने का तरीका, भावनाओं का प्रबंध करना, सही निर्णय लेने, दवाओं का उपयोग नहीं करना और शराब और कैसे एक महत्वपूर्ण स्थिति में व्यवहार करने के लिए जो

पाठ पुस्तकों से बाहर है और बिगड़ती माता–पिता के रिश्तों में सुधार शोधकर्ता सोचा देना चाहता है। एक पाठ्यक्रम विकसित करने पर जो आज की पीढ़ी को भावनात्मक, सामाजिक और सिखाता है बौद्धिक कौशल खुशी से जीने के लिए।

असितबेन, चंद्रकांतभाई पटेल (2012) 'छात्र–शिक्षक की जीवन कौशल और अकादमिक चिंता' शोधकर्त्ता सामाजिक चिंता के अनुसार व्यक्तियों को स्थितियों से डरने का कारण बनता है ऐसी स्थितियों में शर्मीले लोग दूसरों के साथ बातचीत करते समय चिंतित महसूस करते हैं, और किसी भी सामाजिक स्थिति से बचने के लिए भागने लगते हैं। इस अध्ययन में शोधकर्त्ता ने पाया कि शर्मीले लोग सामाजिक स्थितियों से बचते हैं क्योंकि चिन्ता और आतंक की भावना से बचने के लिए ऐसा करने से, उनके बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं होगी, जो दूसरों के बारे में सोच रहे हैं। उद्देश्य 1. छात्र शिक्षकों के बीच जीवन कौशल पर लिंग के प्रभाव का आकलन करने के लिए। 2. छात्र–शिक्षकों के बीच अकादमिक चिंता पर लिंग के प्रभाव का आकलन करना। 3. छात्र–शिक्षकों के जीवन कौशल और अकादमिक घबराहट के बीच संबंधों का आकलन करने के लिए 100 विद्यार्थियों के एक नमूने का चयन ईसाई कॉलेज शिक्षा, गुजरात में आनंद से किया गया। लिंग के संदर्भ में, इसमें 60 लड़के और 40 लड़कियों शामिल थे। अनुसंधान उपकरण – डेटा संग्रह के लिए उपकरण का इस्तेमाल किया गया था प्रश्नावली प्रश्न स्टेटिक एनालिसिस मीन, एसडी और परीक्षण का प्रयोग जीवन कौशल और अकादमिक चिंता के संबंध में लड़कों और लड़कियों के छात्र–शिक्षक कॉलेज के बीच महत्वपूर्ण अंतर का आकलन करने के लिए किया गया। जीवन कौशल और अकादमिक चिंता के बीच महत्वपूर्ण संबंधों का आकलन करने के लिए सहसंबंध तकनीक का उपयोग किया गया था। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष – 1. छात्र–शिक्षक की लड़कों और लड़कियों के जीवन कौशल में महत्वपूर्ण अंतर है। लड़कियां लड़कों की तुलना में अधिक जीवन कौशल प्राप्त करती हैं 2. छात्र–शिक्षक की लड़कों और लड़कियों की शैक्षणिक घबराहट में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। हालांकि, लड़कियां लड़कों की तुलना में अधिक अकादमिक चिंता है। 3. जीवन कौशल और छात्र–शिक्षक की अकादमिक चिंता के बीच महत्वपूर्ण संबंध हैं। परिणाम स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं कि जीवन कौशल कम और शैक्षणिक चिंता अधिक है ।

पार्वती वी, रेन्जिथ आर पिल्लई (2015) 'ग्रामीण स्कूल में किशोरों पर जीवन कौशल शिक्षा का प्रभाव।' इस अध्ययन की पृष्ठभूमि लाइफ स्किल्स से संबंधित है जैसे कि वे अपने व्यक्तिगत, भावनात्मक और सामाजिक विकास में सामना कर रहे हैं। जीवन कौशल शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विशेष रूप से किशोरों के मामले में जीवन कौशल की गहरी समझ प्रदान करना है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य किशोरों के बीच जीवन कौशल के ज्ञान और उनके ज्ञान स्तर पर जीवन कौशल शिक्षा प्रशिक्षण के प्रभाव का विश्लेषण करना है। अध्ययन केरल, भारत के करुणगापल्ली के तालुक में तटीय क्षेत्र के स्कूल में किया जाता है। प्री–पोस्ट अध्ययन से जुड़े

एक प्रयोगात्मक अध्ययन विधि प्रयोग–विलंबित समूह के साथ आयोजित किया जाता है। कुल नमूना 57 प्रयोगात्मक समूह में 30 नमूनों के साथ और दूसरे प्रयोग–देरी वाले समूह में 27 नमूने हैं। प्रयोगात्मक और प्रयोग–विलंबित समूह का परिणाम उनके सामाजिक–जनसांख्यिकीय स्थिति के समान लगभग समान पाया गया था। अध्ययन में किशोरों पर जीवन कौशल शिक्षा प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण प्रभाव था। यह प्रशिक्षण मॉड्यूल के सुधार और संशोधन के साथ इस क्षेत्र में अधिक शोध करने के लिए नया दर्शन देता है। संदर्भ समूह को लक्षित समूह की जरूरतों को पूरा करने की जरूरत है, खासकर जब समुदाय के पिछड़े वर्गों की बात आती है।

शोध का औचित्य

भारतीय शिक्षा प्रणाली में वैदिक काल से वर्तमान तक कई परिवर्तन हुए है। इन परिवर्तनों में जीवन कौशल और पाठ्यक्रम का प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है जो समाज के निर्माण की नींव बनते है। ऐसे में वर्तमान में भारतीय और प्राचीन शिक्षा प्रणाली में प्राचीन वैज्ञानिक शैक्षणिक तरीकों, पाठ्यक्रमों और जीवन कौशलों का तुलनात्मक अध्ययन करने से नवीन शिक्षा प्रणाली के परिष्करण में सहायता प्राप्त हो सकेगी।

शोध कथन

'वैदिक काल से आधुनिक शिक्षा पद्धति तक जीवन कौशल एवं पाठ्यक्रम में परिवर्तनशील प्रतिमान'

शोध के चर

स्वतंत्र चर – वैदिक, उत्तरवैदिक, मध्यकाल, ब्रिटिश काल और आधुनिक शिक्षा पद्धति

आश्रित चर – पाठ्यक्रम और जीवन कौशल

शोध के उद्देश्य

1. वैदिक काल से स्वतंत्रता प्राप्ति पूर्व काल तक के भारतीय शिक्षण प्रणाली में पाठ्यक्रमों और जीवन कौशलों को ज्ञात करना।

2. वर्तमान भारतीय शिक्षण प्रणाली में पाठ्यक्रमों और जीवन कौशलों को ज्ञात करना।

3. जीवन कौशल शिक्षा और पाठ्यक्रमों की प्रकृति के प्रभावों का अध्ययन करना।

4. वैदिक काल से वर्तमान तक की शिक्षा प्रणाली की कमियों और गुणों का अध्ययन करना।

5. वैदिक काल से वर्तमान तक की शिक्षा प्रणाली में जीवन कौशल तथा पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं

1. प्राचीन एवं नवीन शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रमों में सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाता है।

2. प्राचीन एवं नवीन शिक्षा प्रणाली में जीवन कौशलों में सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाता है।

3. प्राचीन शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रमों का सकारात्मक प्रभाव पाया जाता है।

4. प्राचीन शिक्षा प्रणाली के जीवन कौशलों का सकारात्मक प्रभाव पाया जाता है।

5. नवीन शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रमों का सकारात्मक प्रभाव पाया जाता है।

6. नवीन शिक्षा प्रणाली के जीवन कौशलों का सकारात्मक प्रभाव पाया जाता है।

7. प्राचीन एवं नवीन शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम के प्रभावों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

8. प्राचीन एवं नवीन शिक्षा प्रणाली के जीवन कौशल के प्रभावों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में प्राचीन शिक्षण प्रणाली का अध्ययन करना है। अतः इस शोध में ऐतिहासिक शोध पद्धति का उपयोग किया जाएगा। इसमें प्राचीन ग्रंथों, शोध कार्यों और लेखों से प्राचीन शिक्षण प्रणाली के जीवन कौशलों और पाठ्यक्रमों के संबंध में द्वितीयक तथ्यों का संकलन किया जाएगा।

प्रस्तुत शोध में नवीन और प्राचीन शिक्षण प्रणाली के पाठ्यक्रम और जीवन कौशल का अध्ययन करने के लिए प्रयोगात्मक शोध विधि का उपयोग भी किया जाएगा। इसमें प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर नवीन और प्राचीन शिक्षण प्रणाली के पाठ्यक्रम और जीवन कौशल का अध्ययन किया जाएगा।

प्रयोगात्मक विधि के लिए नवीन शिक्षा प्रणाली की जीवन कौशल संबंधी पाठ्य पुस्तकों और प्राचीन शिक्षा प्रणाली की जीवन कौशल संबंधी कथाओं, कहानियों, पंचतंत्र, दंतकथाओं, गाथाओं और वैदिक साहित्य का उपयोग किया जाएगा।

जनसंख्या

शोध में जयपुर जिले के प्राथमिक स्तरीय विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चुना गया है।

न्यादर्श

शोध में 50–50 प्राथमिक स्तरीय विद्यार्थियों का चयन अदैव निदर्शन पद्धति द्वारा किया जाएगा। इसमें 50 प्राथमिक स्तरीय विद्यार्थियों के एक समूह को नवीन शिक्षा प्रणाली से अध्ययन करवाया जाएगा और दूसरे 50 प्राथमिक स्तरीय विद्यार्थियों को प्राचीन शिक्षा प्रणाली से अध्ययन करवाया जाएगा।

सांख्यिकी

शोध में ऐतिहासिक तुलनात्मक अध्ययन हेतु विश्लेषणात्मक विधि का उपयोग करने के साथ ही प्राथमिक तथ्यों के विश्लेषण हेतु सहसंबंध, टी टेस्ट, मध्यमान और मानक विचलन विधियों का उपयोग किया जाएगा।

अध्याय विन्यास

1. परिचयात्मक
2. संबंधित साहित्य का विश्लेषण
3. शोध विधि
4. तथ्यों का विश्लेषण
5. निष्कर्ष एवं सुझाव

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Sandhya Khera, Shivani Khosla (Research Scholar) (2012). A Study of Core Life Skills of Adolescents in Relation to their Self Concept developed through Yuva schools Life Skill Programme. IRJC International Journal of Social Science & Interdisciplinary Research, Vol.1, Issue 11, November 2012, ISSN 2277 3630, Pp.115. Jamia Millia Islamia, New Delhi.
2. Satya Mohan, Donald Perras, 2012, "Need for 21st Century Curriculum". Edutracks, Vol. 11-No.9, pp. 41-47.
3. Vineeta Sirohi, Avinash Kumar Singh (2012). Innovative Secondary Education for Skills Enhancement (ISESE) Skills Defined by Curricula: South and Southeast Asia. (August 1, 2012), Department of Foundations of Education, New Delhi, India
4. Aparna.N and Raakhee.A.S.(2011).Life Skill Education for Adolescents: Its Relevance and Importance,GESJ: Education Science and Psychology. No.m2(19), ISSN-1512-18013. UGC Research Scholar, Department of Education, University of Kerala.
5. Bindhu David, Shiny John. (2011). Life Skills and Attitude towards Vocation among the Vocational Higher Secondary and Higher Secondary School Students, EduTracks, April 2011, vol.10-No-8. Pp-16- 18.
6. Bharath Srikala, KV Kishore Kumar (2010). Empowering Adolescents with Life Skills Education in Schools –School Mental Health Program: Does it work? Indian journal of Psychaitry. 2010 oct-dec. 52-4: 344-349.
7. Jayant Arrawatia (2009). Schools to be Responsible for Teaching Life Skill Education to Children.Partner, JRC Solutions 01.06. 2009.
8. Yogesh R. Kulkarni (2009). A Study and Development of Educational and Life Skill Learning Strategy for the Children of Nomadic and De-Notified Tribes in Maharashtra using Information Communication Technology (ICT). Yashwant Rao Chavan Maharashtra Open University, Nasik, India. Retrieved from http//:www.academia.edu/1121735/Educational_Research_Abstracts
9. Dubat K, Punia S, Goyal R (2007). A Study of Life Stress and Coping Styles among Adolescents Girls.Journal of Social Science.vol- 14 (2). Pp-191-194
10. Ganesh B. Singh (2006). Life Skill Education, Nature of Issues and their Linkage to System Provision. Research Centre for Education, Bulkhu Publications, Kathmandu, Nepal.pp-103. Retrieved from http//:www.cerid.org
11. Sharma S. (2003). Measuring life skills of adolescents in a secondary school of Kathmandu: an experience.In Kathmandu University. Medical Journal.Vol.1, No. 3. Issue 3, 170-176
12. Hossein Jenaabadi (2015).The Effect of Life Skills Training on the Mental Health and Level of Resilience among Teachers of Normal Students and Teachers of Exceptional Students in Zahedan. Vol.4 No.2. April 2015. Department of Education, University of Sistan and Baluchestan, Zahedan, Iran.
13. Doug Couch (2009). The Law of Attraction: Why Are People Still Failing? The Art of Inspiration. May 08 2009.Living Above the Line: A Life Skill that Creates Personal Power. Retrieved from http//:creationthoughts.com

14. Nida Bayindir, (2009), Teachers Perception Levels of Activities Directed Towards Professional Progress, Education, Fall 2009, www.lifeskill.com
15. Kord-Noghabi and Hassan Pasha Sharifi (2008).Preparation and Compilation of a Life Skills Curriculum for Students in the High School Period.Quarterly Journal of Educational Innovations. No. 24, spring 2008.Pp-46-56
16. Mohd. Zafar Iqbal (2006). Transformative Model of Life"s Skills Basic Education for Gender Impact of Violence, Sexual Coercion and Vulnerability to HIV Aid through Distance Mode of Teacher Training. Dean, Faculty of Education, Allama Iqbal Open University, Islamabad, Pakistan. Retrieved from www.jmc.edu/include/department/msw/syllabus/MSW2014.pdf.
17. Botvin, G. J & Griffin K.W. (2004). Life Skills Training: Empirical Findings and Future Directions. The Journal of Primary Prevention. Issue-25. Pp-211-232
18. Zollinger, T.W., Commings, S.F., & Caine, V. (2003).Impact of the Life Skills Training Curriculum on Middle School Students Tobacco use in Marion County, Indiana.IRJC International Journal of Social Science & Interdisciplinary Research. Vol.1 Issue 11, November 2012, ISSN 2277 3630. pp.120.
19. Felisa Deskeo (2002). The Importance of Adding Life Skills to Standard Curricula. Retrieved from http//:www.lifeskill.com
20. Jennifer Noel Klaus (2000).High School Career Education: Student"s Perceptions of the Life Planning Course. High School Education: Ashland University. Research Journal: UCR Resources, vol. 11.
21. Parsons.C (1988). Skills for Adolescence: An Analysis of project material, Training and Implementation. Christ Church College.Evaluation unit, Canterbury, UK.
22. Parvathy V, Renjith R Pillai (2015). Impact of Life Skills Education on Adolescents in Rural School: VishwaVidyapeetham, Kollam, Kerala, India. International Journal of Advanced Research Article.Volume 3, Issue 2, pp-788-794. ISSN 2320-5407
23. Sailesh Sharma. (2o15). Do Leadership Qualities Determine Competent Principals. Innovare Journal of Education. Vol 3, Issue 1, 2015, 1-6 , ISSN: 2347-5528
24. Asmitaben, Chandrakantbhai Patel (2012. Life Skill and Academic Anxiety of Student-Teacher. Indian Streams Research Journal, International Recognized Multidisciplinary Research Journal. Volume:II, Issue : X, November – 2012. ISSN No : 2230-7850.
25. Subitha G. (2011). Is the current educational system imparting life skills education? Retrieved from http//:indian education review.com